मानसश्री गोपाल राजू (वैज्ञानिक)
अ.प्र. राजपत्रित अधिकारी
ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र
30, सिविल लाइन्स
रूड़की-247 667 (उत्तराखण्ड)
मोबाइल : 09760111555
website : www.gopalrajuarticles.yolasite.com

Email:gopalraju12@yahoo.com

# मंगल दोष का हौव्वा और परिहार

''वैसे तो हम ज्योतिष-वोतिष में विश्वास नहीं करते परन्तु लड़की मंगली है, आप हमें केवल यह बता दें कि हमारा लड़का भी क्या मंगली है . . . ।'' ऐसे सैकड़ों लोग मेरे पास आते हैं जिनकी समस्या कुछ इसी प्रकार की होती है। यह मंगल दोष का हौवा क्या है जो विषय में विश्वास न करने वाले को भी भय से भ्रमित और आतंकित कर देता है। क्या वास्तव में इस दोष के परिणाम स्वरुप पारिवारिक जीवन नष्ट हो जाता है? क्या मांगलिक दोष के लड़के अथवा लड़की का विवाह मंगली दोष के लड़के अथवा लड़की से ही करना चाहिए? यदि यह नियम नहीं अपनाए तो दोनों में से किसी एक की मृत्यु हो जाएगी?

जिस ग्रह का नाम मंगल है, वह अमंगल कैसे कर सकता है। यह मेरा अपना तर्क है। अन्य कुछ एक बौद्धिक वर्ग के लोग भी मेरी बात से सहमत होंगे। परन्तु आज अधिकांश व्यक्ति मंगल दोष के हौवे से भयभीत देखे जाते हैं। उनका सारा ध्यान एक बात में निहित रहता है कि लड़की में बस मंगल दोष न हो।

मंगल को लड़का अथवा लड़की की कुंडली में उस समय दोषी माना जाता है जब वह लग्न से प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम अथवा द्वादश भाव में स्थित होता है। कुछ विद्वान मंगल की उक्त भाव गत स्थिति सुदर्शन चक्र अर्थात् सूर्य अथवा चंद्र ग्रहों से भी देखते हैं। दक्षिण भारत में यह स्थिति शुक्र से भी देखी जाती है। अनेक विद्वान उक्त भावों के अतिरिक्त द्वितीय भाव को भी मंगल ग्रह के लिए अशुभ मानते हैं। मंगल इन स्थानों में क्यों दोष पूर्ण माना गया है - यह स्पष्ट करना आवश्यक है।

व्यक्ति का लग्न उसके स्वास्थ्य, जीवन और व्यक्तित्व का द्योतक है। लग्न जीवन साथी के लग्न अर्थात् सप्तम भाव से गिनने पर सातवां स्थान ही होता है। जो कि मारक स्थान माना गया है इसलिए यहॉ मंगल की स्थिति जीवन साथी की अल्प आयु दर्शाती है।

पत्नी का द्वितीय भाव कुटुंब और पारिवारिक प्रसन्नता दर्शाता है। विवाह, जन्म अथवा मरण द्वारा यह कुटुंब के विस्तार अथवा कमी का भी कारक है। द्वितीय भाव जीवन साथी के लग्न से आठवां भाव होता है जो जीवन साथी के लिए मानसिक तनाव और अनिष्ट का कारण बनता है।

चौथा भाव पारिवारिक वातावरण का द्योतक है। मंगल की चतुर्थ भाव में स्थिति व्यक्ति के लग्न को दोषी बनाती है जो कि उसके सुख और स्वास्थ में बाधक सिद्ध होती है।

सप्तम स्थान विवाह, सामाजिक बंधन, अथवा साथी का कारक माना जाता है। लग्न से सातवां स्थान मारक है। यह दोनों के दीर्घ आयु और स्वास्थ्य का द्योतक है। इसलिए यहॉ मंगल उक्त गुणों को क्षीण करता है।

अष्टम स्थान व्यक्ति के लिए कठिनाईयां, दुर्भाग्य और अल्पायु का कारण बनता है। यह जीवन साथी के लिए धन और दुर्भाग्य संबंधी अड़चनें प्रदान कर सकता है।

द्वादश भाव जीवन का वास्तविक सुख-मोक्ष और व्यय दर्शता है। इसलिए मंगल को यहॉ भी अशुभ माना गया है।

यह हुआ मंगल के इन भावों में स्थित होने का दुष्परिणाम। यह दोष वास्तव में किसको प्रभावित करेगा और किसको नहीं यह मात्र मंगल ग्रह से कदापि पता नहीं चल सकता। इसके लिए अन्य ग्रहों की स्थितियों का अध्ययन भी आवश्यक है। मंगल दोष का हौवा बनाने वालों के अनुसार तो लगभग 75 प्रतिशत लोगों को मंगल दोष से पीड़ित होना चाहिए। तो क्या इन सब के पारिवारिक जीवन को दुर्भाग्यपूर्ण मान लिया जाए? क्या यह सब लोग अल्पायु होगें? ऐसा नहीं है। ऐसा भी नहीं है कि मंगल दोष होता भी नहीं है। अधिकांश स्थितियों में मंगल दोष का परिहार हो जाता है - इस ओर ध्यान ही नहीं दिया जाता। अथक परिश्रम के बाद मंगल दोष के परिहार मैं जुटा पाया हूँ जो कहीं एक पुस्तक में मिलना असंभव है। पाठकों के लाभार्थ वह यहॉ प्रस्तुत कर रहा हूँ इन्हें अध्ययन करके ही मंगल दोष होने अथवा न होने का निर्णय करें :

1. नीचे दिए गये चक्र में राशियों के अंक दिए गये हैं। प्रथम स्थान को लग्न माना गया है और यहॉ ही मंगल की स्थिति विभिन्न राशि अंकों में मानी गयी है। लग्न की स्थिति को ही सूर्य, चंद्र अथवा शुक्र की स्थिति माना गया है। यदि इनमें से किसी भी राशि अंक में मंगल होगा तो प्रभाव हीन होगा।

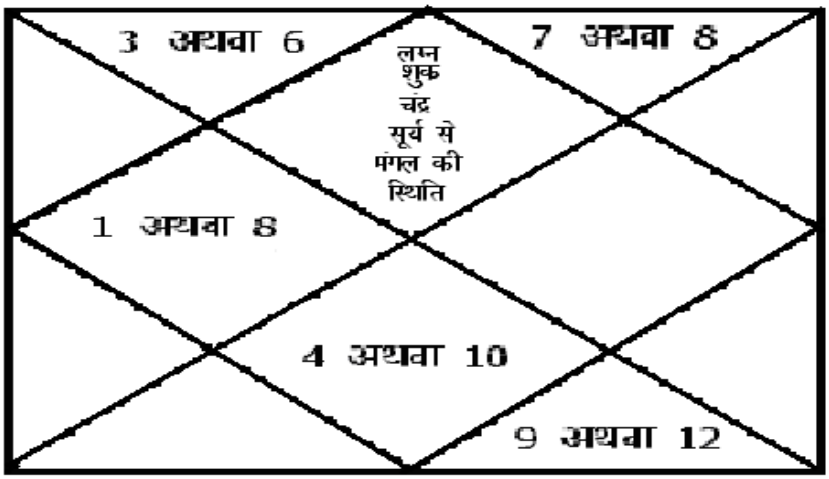

2. मंगल और गुरु अथवा चंद्रमा और मंगल कहीं भी साथ हों अथवा मंगल पर गुरु की दृष्टि हो तो मंगल  दोष नहीं होगा।
3. चंद्र 1, 4, 7 अथवा दसवें भाव में हो तो दोष नहीं होगा।
4. राहु 10 वें और शनि 11 वे भाव में हो अथवा शनि ग्रह से 1, 4, 7, 8 अथवा बारहवें भाव में हो तो दोष नहीं होगा।
5. लग्न से गुरु 1, 4, 5, 7, 9 अथवा 10 वे भाव में हो तो मंगल दोष नहीं होगा।
6. मंगल, शनि के साथ कहीं भी स्थित हो अथवा मंगल पर शनि की पूर्ण दृष्टि हो तो मंगल दोष नहीं होता।
7. राहु षष्टम् भाव में हो तो दोष नहीं होता।

मंगल दोष का परिहार उस स्थिति में भी होता है जब वह विभिन्न लग्नों से अपने दोषपूर्ण भावों में स्थित होता है। यथा :

1. मेष अथवा सिंह लग्न में मंगल दोष नहीं लगता।
2. वृष लग्न में मंगल लग्न में होने से दोष रहित होता है।
3. मिथुन लग्न में सप्तम भाव के अतिरिक्त मंगल प्रभावहीन होता है।
4. कर्क लग्न में अष्टम भाव को छोड़ कर मंगल दोष का कहीं दोष नहीं होता।
5. सिंह लग्न में केवल अष्टम भाव में मंगल का दोष होता है
6. कन्या लग्न में 1, 4 अथवा 7वें भाव को छोड़कर मंगल दोष नहीं होता।
7. तुला लग्न में 1 अथवा 12वें भाव के अलावा मंगल दोष नहीं होता।
8. वृश्चिक लग्न में 8वें भाव के अतिरिक्त मंगल दोष नहीं होता।
9. धनु लग्न में 1 अथवा 4 वें भाव के अतिरिक्त मंगल प्रभावहीन हो जाता है।
10. मकर लग्न में केवल 12वें भाव में मंगल प्रभाव में रहता है।

11. कुंभ लग्न में लग्न के अतिरिक्त मंगल प्रभावहीन होता है।

12. मीन लग्न में मंगल 2 अथवा 8 वें भाव में दोषमुक्त होता है।

इनके अतिरिक्त कुछ अन्य परिहार यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ।

1. यदि लड़के व लड़की दोनों की कुण्डली में मंगल 1, 2, 4, 7, 8 अथवा 12 वें भाव में हो।
2. यदि सप्तमेष शुक्र पाप ग्रहों से दृष्ट न हो।
3. यदि सप्तमेष बलवान हो अथवा सप्तम भाव में गुरु हो।
4. सप्तम भाव में शुक्र व शनि साथ-साथ स्थित हों।
5. कुण्डली में गुरु, चंद्र, शनि तथा शुक्र बलवान हों।
6. यदि लग्न में मेष, सिंह, वृश्चिक अथवा मकर राशि हो।
7. यदि उक्त में से कोई भी राशि 2, 4, 7, 8 अथवा 12 वें भाव में स्थित हो।
8. सप्तमेष शुक्र के साथ हो।
9. सप्तमेष यदि 1, 4, 5, 7, 9 अथवा 10 वें भाव में हो।
10. शुक्र 6 अथवा 12 वें भाव में मीन, वृष अथवा तुला राशि का हो।

मंगलदोष परिहार में सबसे महत्वपूर्ण योग ''नीच भंग योग'' के तथ्य को अधिकांश विद्वुतजन प्रायः अनदेखा कर देते हैं। बस दो चार मोटी-मोटी बातों को देखा और मंगल का दोष निकाल दिया। मंगल के अपनी नीच राशि तथा मंगल के तथाकथित दोषपूर्ण स्थानों पर रहने से निम्न तीन बिन्दुओं से मंगल दोष का पूर्ण परिहार हो जाता है।

1. यदि चंद्र अथवा लग्न से उस नीच अथवा शत्रु क्षेत्रिय राशि का स्वामी ग्रह मंगल उच्च स्थान में (प्रायः इस भाव से सातवां) स्थित हो।
2. यदि इस नीच भाव का स्वामी ग्रह मंगल अपनी उच्च अथवा स्व की राशि अथवा केन्द्र में स्थित हो।

3. यदि उस नीच ग्रह का स्वामी ग्रह नीच के मंगल ग्रह के साथ युक्त अथवा दृष्टि संबंध बनाए।

मूलतः मंगल ग्रह का दोष लड़के तथा लड़की के खून से संबंधित है। जन्म पत्री मिलान की प्रथा जब कभी बनी होगी तब संभवतः क्लीनिकल टैस्ट सुविधा उपलब्ध न होगी। यह मान्यता रही होगी कि लड़के लड़की का खून खराब न हो क्योंकि खून खराब होने से सन्तान स्वस्थ नहीं होगी। आगे होने वाली संतानों में वर्णसंकर होता जाएगा। इस वर्णसंकर को बचाने के लिए ही तथाकथित इस दोष पर इतना बल दिया गया होगा। ज्योतिष की दृष्टि से यह उचित भी है। नैसर्गिक रुप से मंगल खून का प्रतिनिधित्व करता है। चतुर्थ भाव मॉ का, कोख का कारक है। यदि यह दोष पूर्ण है तो मॉ तथा संतान कैसे अच्छी होगी? इसलिए इस बात पर बल दिया गया है कि रज और वीर्य के कारक ग्रह गुरु और शुक्र का क्रमशः लड़की और लड़के के लिए बलवान होना आवश्यक है।

मेरी भी यही मान्यता है कि विवाह से पूर्व लड़की और लड़के का खून परीक्षण भी हो, क्योंकि मात्र जन्म पत्री के आधार पर उचित ज्ञान के अभाव में ठीक-ठीक दिशा निर्देश नहीं हो पाता और इस दोष के कारण (हो चाहे न हो) अच्छे अच्छे रिश्ते हाथ से निकल जाते हैं इसलिए मंगल दोष से न घबरा कर उनसे घबराएं जिन्होंने मंगल दोष को हौवा बना दिया है।

मानसश्री गोपाल राजू (वैज्ञानिक)
(राजपत्रित अधिकारी) अ.प्रा.

ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र
30, सिविल लाईन्स
रूड़की 247 667 (उ.ख.)